National Journal of Hindi & Sanskrit Research

ISSN: 2454-9177
NJHSR 2026; 1(66): 43-48
© 2026 NJHSR
www.sanskritarticle.com

कृष्णा
शोध छात्र, शिक्षाशास्त्र संकाय,
श्री लाल बहादुर शास्त्री केंद्रीय संस्कृत-विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

Correspondence:
कृष्णा
शोध छात्र, शिक्षाशास्त्र संकाय,
श्री लाल बहादुर शास्त्री केंद्रीय संस्कृत-विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

एनसीईआरटी 83 मूल्य विश्लेषण कक्षा सात की संस्कृत पुस्तक "रुचिरा"

कृष्णा

शिक्षा मानव की अंतर्निहित शक्तियों को प्रकट करने का सशक्त माध्यम है। यह केवल ज्ञान का संचय मात्र नहीं, बल्कि व्यक्तित्व का विकास और मानवता के उच्च आदर्शों का साक्षात्कार कराती है। शिक्षा के माध्यम से व्यक्ति न केवल अपने आत्म-स्वरूप को पहचानता है, बल्कि उसे जीवन में मानवीय मूल्यों की अनुभूति का अवसर भी प्राप्त होता है। शिक्षा जीवन का एक महत्वपूर्ण अंग है; यह केवल एक औपचारिक प्रक्रिया नहीं है, बल्कि व्यक्ति के संपूर्ण जीवन के साथ अभिन्न रूप से जुड़ी हुई है।

NEP 2020 में मूल्य शिक्षा के विचार का उद्देश्य कुछ इस प्रकार है:

- **मानव मूल्यों का विकास ।**
- **समस्या-समाधान का नजरिया** ।
- **सम्पूर्ण विकास** ।
- **समानता और सामाजिक न्याय** ।

ये नीतियां और प्रचलन इसलिए लाए गए हैं, ताकि हमारी शिक्षा प्रणाली को व्यक्ति के नैतिक और सामाजिक विकास के लिए सुधारा जा सके और एक ऐसे समाज का निर्माण हो जो सत्य, न्याय और धर्म पर आधारित हो।

वर्तमान शिक्षा प्रणाली मुख्यतः व्यक्ति को केवल सुविधाओं और भौतिक संसाधनों के प्रति आकर्षित करती है। इसका परिणाम यह हुआ है कि व्यक्ति, परिवार, समाज, और राष्ट्रों में लाभ और भोग की लालसा बढ़ गई है, जिससे प्रतिस्पर्धा, संघर्ष और समस्याओं में निरंतर इज़ाफ़ा हो रहा है।

वास्तविक ज़रूरत इस बात की है कि शिक्षा केवल नौकरी या आय प्राप्ति के उद्देश्य तक सीमित न रहकर व्यक्ति के समग्र विकास को बढ़ावा दे। यह तभी संभव है जब शिक्षा व्यक्ति के भीतर मानवीय संवेदनाओं, नैतिकता और आत्म-जागरूकता का विकास कर सके।

मनुष्य के जीवन में मूल्यों का विशेष महत्व है। एक मूल्य-विहीन जीवन एक आत्मा-विहीन शरीर के समान होता है। ऐसे जीवन में न तो कोई दिशा होती है, न ही कोई उद्देश्य। प्रश्न यह उठता है कि आखिर मूल्य क्या हैं? सरल शब्दों में कहें तो, "जो भी तत्व या विचार समाज और व्यक्ति के कल्याण में सहायक होते हैं, वे मूल्य कहलाते हैं।" मूल्यों का स्वरूप अमूर्त होता है और ये नैतिकता तथा निर्णय की कसौटी पर परखे जाते हैं। मानव मूल्य स्वयं ही समाज के रक्षक और प्रेरक हैं। किसी समाज में मूल्य पद्धति में बदलाव आने से सामाजिक ढांचे में भी परिवर्तन आ जाता है।

वर्तमान युग में न केवल भारत बल्कि पूरे विश्व में मानवीय मूल्यों का बहुत तेजी से पतन हो रहा है, जिससे हमारा सामाजिक और राष्ट्रीय जीवन लगातार दूषित होता जा रहा है। आज शिक्षा का अत्यधिक भौतिकीकरण हो चुका है, जो मानव और मानवता दोनों के लिए नुकसानदेह सिद्ध हो रहा है।

अतः यह अत्यंत आवश्यक है कि हम अपनी शिक्षा व्यवस्था की पुनर्समीक्षा करें और उसमें मानवीय मूल्यों को शामिल कर जीवन के प्रति एक गहरा दृष्टिकोण अपनाएं। हमें एक ऐसी शिक्षा प्रणाली के निर्माण की आवश्यकता है जो भौतिक जरूरतों को पूरा करने के साथ-साथ मूल्य-आधारित भारतीय संस्कृति, नैतिकता और आत्म-संयम को भी अक्षुण्ण रख सके। इस मूल्य-आधारित शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य केवल जानकारी देना नहीं, बल्कि मानवीय संवेदनाओं और सामाजिक उत्तरदायित्वों से युक्त एक आदर्श समाज की पुनर्रचना करना है।

मूल्य का अर्थ

मूल्य' को अंग्रेजी भाषा में 'वेल्यू कहा जाता है। टंसनम शब्द की उत्पत्तिं लैटिन भाषा के 'Vallere' शब्द से मानी जाती है, जो किसी वस्तु की कीमत, विशेषता, गुण या उपयोगिता को व्यक्त करता है। मूल्य एक ऐसी आचरण-संहिता या सद्गुणों का समावेश है, जिसे अपनाकर व्यक्ति अपने व्यक्तित्व का विकास कर समाज में प्रभावशाली तथा विश्वसनीय बनकर उभरता है। इस मूल्य में मानव की धारणाएँ, विचार, विश्वास, मनोवृत्ति एवं आस्था आदि अन्तः निहित होते है। (मूल्य शब्द की उत्पत्ति संस्कृत के 'मूल' धातु के साथ 'यत' प्रत्यय के संयोग से हुई है जिसका शब्दिक अर्थ है, जो मूल में हो, प्रतिष्ठा के योग्य किसी वस्तु के विनिमय में दिए जाने वाले धन, कीमत, दाम या बाजार भाव से है। प्रखर चिंतक एवं मानवतावादी श्री ए. नागराज के अनुसार एक वस्तु इकाई की दूसरी इकाई के साथ भागीदारी ही उसका मूल्य है।

मूल्य' वे सांस्कृतिक अथवा व्यक्तिगत धारणाएँ अथवा आदर्श है जिसके द्वारा वस्तुओं अथवा धारणाओं की एक दूसरे के साथ तुलना की जा सकती है, उन्हे स्वीकार अथवा अस्वीकार किया जा सकता है। सापेक्षित रूप से यह देखा जा सकता है कि वांछित अथवा अवांछित क्या है, अच्छा एवं बुरा क्या है, अधि एक ठीक और कम ठीक क्या है। मूल्य लक्ष्य एवं उद्देश्य है जिसके प्रति एक व्यक्ति अथवा सम्पूर्ण समाज के व्यवहार को निर्देशित किया जाता है। न्याय, स्वतंत्रता देश भक्ति, अहिंसा, सत्ता, समानता आदि मूल्यों के ही कुछ उदाहरण हैं।

प्रत्येक मनुष्य समाज से कुछ न कुछ ग्रहण करता है उसको धारण करता है उस धारण योग्य तथ्य को वह मान्यता देता है तथा उसका महत्व समझता है। यही महत्व उन आदर्शों तथा विचारों का मूल्य कहलाता है।

मूल्य की परिभाषा

किलपैट्रिक ने मूल्यो के विषय में कहा है कि मनुष्य लक्ष्यों की खोज करता है, इस व्यवहार से इच्छा तथा प्रयत्न उत्पन्न होते हैं, इन इच्छाओं से सचेतना तथा प्रयत्न उत्पन्न होते हैं। चूँकि उद्देश्यो में संघर्ष भी उत्पन्न हो जाता है, अतः मनुष्य के लक्ष्यों मे सापेक्षता रहती है। इस सापेक्षता की कसौटी से ही मूल्यों की अभिवृद्धि होती है, जीवन में मूल्यों का महत्व होता है, शिक्षा जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है, अतः शिक्षा में मूल्यों का अपना महत्व होता है।

'मूल्य' एक विश्वास है जो यह बताते है कि क्या अच्छा है और क्या वांछनीय है। मूल्य यह परिभाषित करते है कि क्या महत्वपूर्ण है, क्या लाभप्रद है और क्या प्राप्त करने योग्य है।

डॉ. धर्मपाल मैनी के अनुसार "देश काल और परिस्थिति के सन्दर्भ में जन सामान्य की उदात्त मान्यताएँ ही मानव मूल्य होते हैं।"

मूल्यपरक शिक्षा की आवश्यकता :-

आज आधुनिकता के अंधानुकरण, उपभोक्तावादी प्रवृत्तियों और विदेशी विचारधाराओं के प्रभाव के कारण भारत के प्राचीन सांस्कृतिक मूल्य, दर्शन और कर्तव्यपरकता की भावना विकृत एवं क्षीण होती जा रही है। अविश्वास और आत्म-अनास्था के इस दौर में मूल्यपरक शिक्षा की आवश्यकता पहले से कहीं अधिक बढ़ गई है; जैसा कि वर्ष 2005 की विद्यालयी शिक्षा के पाठ्यचर्या की रूपरेखा में भी रेखांकित किया गया है कि सामाजिक समरसता और लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए गुणात्मक व व्यापक शिक्षा ही सबसे सशक्त माध्यम है। अतः शिक्षा का यह एक बड़ा दायित्व बनता है कि वह समाज के वंचित और निर्बल वर्गों—जैसे अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, महिलाओं, विकलांग बच्चों और अल्पसंख्यकों—के उत्थान और सशक्तिकरण में अपना सक्रिय योगदान देकर उन्हें मुख्यधारा से जोड़े।

शिक्षा में पाठ्यपुस्तकों का महत्व और स्थान:-

पाठ्यपुस्तकें एक महत्वपूर्ण माध्यम के रूप में कार्य करती हैं। शिक्षा आयोग (1964-66) ने कहा था कि स्कूलों में नए ज्ञान, नए पाठ्यक्रम और नई शिक्षण विधियों के प्रसार के लिए पाठ्यपुस्तकें सबसे प्रभावी साधन हैं।

पाठ्यपुस्तकें स्कूलों में प्रदान किए जाने वाले ज्ञान के मानक निर्धारित करती हैं। वे यह स्पष्ट करती हैं कि शिक्षक को किस स्तर तक ज्ञान होना चाहिए और छात्रों को कितना सीखना अपेक्षित है। इन पुस्तकों की सामग्री विद्यार्थियों के शैक्षणिक स्तर को ऊंचा उठाने में सहायक होती है। शैक्षिक रूप से क्या आवश्यक और अपरिहार्य है, इसका निर्धारण पाठ्यपुस्तकों के माध्यम से किया जाता है। पाठ्यपुस्तकें शिक्षकों का समय और ऊर्जा बचाती हैं, जिससे वे अन्य शिक्षण सामग्री तैयार करने में अधिक समय लगा सकते हैं।

पाठ्यक्रम के अनुसार पाठ्यपुस्तकों का विकास 16वीं शताब्दी में आरंभ हुआ। सबसे पहले कमेनियस (1592-1670) ने भाषा-शिक्षण के लिए पाठ्यपुस्तक लिखी। इसके बाद, पाठ्यपुस्तकों के महत्व को देखते हुए उनका व्यापक उपयोग होने लगा और विभिन्न विषयों पर अनेक शिक्षाविदों एवं विशेषज्ञों ने पुस्तकें लिखीं।

19वीं शताब्दी में फ्रॉबेल, डी.वी., और महात्मा गांधी ने पुस्तकीय ज्ञान का विरोध करते हुए अनुभव-आधारित और क्रियात्मक शिक्षा

पर जोर दिया। हालांकि, शिक्षण की बोधगम्यता के कारण पूरी तरह से पुस्तकों की उपेक्षा नहीं की जा सकी।

कुछ शिक्षाशास्त्रियों ने पुस्तकों के बिना शिक्षण के प्रयोग भी किए, लेकिन वे भी इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि पाठ्यपुस्तकों का महत्व समाप्त नहीं किया जा सकता। इसलिए यह सिद्ध हो चुका है कि पाठ्यपुस्तकों के बिना शिक्षण प्रक्रिया संभव नहीं है।

उद्देश्य:

एनसीईआरटी द्वारा निर्धारित 83 मूल्यों का कक्षा 7 की संस्कृत पुस्तक "रुचिरा" में मूल्यों के समावेशन का अध्ययन करना।

- यह ज्ञात करना कि एनसीईआरटी द्वारा निर्धारित 83 मूल्यों में से कितने मूल्य पुस्तक में समाहित हैं।
- एनसीईआरटी की संस्कृत पाठ्यपुस्तक "रुचिरा" में मूल्य से संबंधित कितनी तथा किस प्रकार की पाठ्यवस्तु सम्मिलित की गई है।
- एनसीईआरटी द्वारा निर्धारित 83 मूल्यों का पाठ्यपुस्तक में सम्मिलित करने की प्राथमिकता तथा वर्णबद्धता को मापने का अध्ययन करना।
- पाठ्यपुस्तक में समाहित मूल्यों का छात्रों के स्तर के अनुसार कितनी सार्थकता है।

NCERT 83 मूल्य-

समाज में बढ़ते असंतोष और उससे उत्पन्न अशांति तथा अलगाववाद को रोकने के लिए आज मूल्य-आधारित शिक्षा की आवश्यकता पहले से कहीं अधिक है। इसी उद्देश्य से विभिन्न शैक्षिक, धार्मिक और सामाजिक संगठनों ने मिलकर मूल्यों के संरक्षण हेतु अनेक प्रयास किए हैं, जिनमें मीडिया की प्रभावी भूमिका पर भी जोर दिया गया है।राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद (एनसीईआरटी) ने भारतीय संस्कृति की समझ और पहचान को बढ़ावा देने के लिए सामाजिक, नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों पर एक विशेष दस्तावेज तैयार किया है, जिसे विभिन्न शैक्षणिक पाठ्यक्रमों में शामिल किया गया है। इसका मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों को परंपरागत रीति-रिवाजों और जीवन मूल्यों से अवगत कराना है, क्योंकि मूल्य ही संस्कृति का गतिशील पक्ष हैं और यही हमें भारतीय होने का गौरव प्रदान करते हैं।

इसी दृष्टिकोण से एनसीईआरटी ने मानवीय गुणों को बढ़ावा देने के लिए 83 महत्वपूर्ण मूल्यों को शैक्षिक पाठ्यक्रम में शामिल करने का सुझाव दिया है। वे इस प्रकार हैं-

83 मूल्य राष्ट्रीय शैक्षणिक प्रशिक्षण एवं अनुसंधान परिषद नई दिल्ली द्वारा किया गया है।

1. ब्रह्मचर्य
2. दूसरों के सांस्कृतिक मूल्यों को पसन्द करना
3. अस्पृश्यता का बहिष्कार करना
4. नागरिकता
5. दूसरों के प्रति सहानुभूति
6. दूसरों से सरोकार रखना
7. सहयोग
8. स्वच्छता
9. करुणा
10. परोपकार
11. सबकी भलाई
12. साहस
13. सौजन्य
14. जिज्ञासा
15. प्रजातांत्रिक निर्णय लेना
16. भक्ति-भावना
17. व्यक्ति की गरिमा का आदर करना
18. शारीरिक श्रम की गरिमा का आदर करना
19. कर्तव्य-भावना
20. अनुशासन
21. सहिष्णुता
22. समानता
23. मित्रता
24. विश्वसनीयता
25. भाईचारा
26. स्वाधीनता
27. सरलता
28. अच्छा तौर-तरीका
29. सज्जनता
30. कृतज्ञता
31. ईमानदारी
32. दूसरों की सहायता करना
33. मानवीय दृष्टिकोण
34. स्वस्थ-वृत्त
35. स्वयंप्रेरित होकर कार्य करना
36. आत्मनिष्ठा
37. न्याय
38. दयालुता
39. जानवरों के प्रति दयाभाव
40. कर्तव्य के प्रति निष्ठा
41. नेतृत्व
42. राष्ट्रीय एकता
43. राष्ट्रीय जागृति
44. अहिंसा

45. राष्ट्रीय एकात्मता
46. आज्ञापालन
47. शांति
48. समय का सदुपयोग
49. समयशीलता
50. देशभक्ति
51. शुद्धता
52. ज्ञान के प्रति जिज्ञासा
53. साधनसंपन्नता
54. नियमितता
55. दूसरों के प्रति सम्मान
56. वृद्धों के प्रति श्रद्धा
57. निष्ठा
58. सादा जीवन
59. सामाजिक न्याय
60. आभानुशासन
61. स्वावलम्बन
62. आत्म-सम्मान
63. आत्मविश्वास
64. आत्मोपजीवन
65. स्वाध्याय
66. आत्मनिर्भरता
67. आत्मनियंत्रण
68. आत्मसंयम
69. समाज-सेवा
70. मानवमात्र की एकता
71. सदसद्विवेक
72. सामाजिक उत्तरदायिल
73. समाजवाद
74. सहानुभूति
75. धर्मनिरपेक्षता एवं सर्वधर्म समभाव
76. अन्वेषण-वृत्ति
77. सामूहिक कार्य में निष्ठा
78. समूह-वृत्ति
79. सत्यता
80. सहनशीलता
81. सार्वजनीन सत्य
82. विश्व-बन्युत्व
83. राष्ट्रीय एवं सार्वजनिक संपत्ति की रक्षा करना

एनसीईआरटी द्वारा दी गई 83 मूल्यों की सूची में कुछ पुनरावृत्ति दिखती है, क्योंकि मानवीय मूल्य (जैसे धार्मिक भावना, नैतिकता और आध्यात्मिकता) आपस में प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से जुड़े होते हैं और एक-दूसरे का आधार बनते हैं। उदाहरण के लिए, स्वाध्याय से व्यक्ति आत्मानुशासित और नियमबद्ध होता है, जिससे वह कर्म के महत्व को समझ पाता है। इस प्रकार, एक मूल्य का प्रभाव दूसरे पर पड़ना स्वाभाविक है, जिसके कारण मूल्यों को किसी निश्चित सीमा में बांधना असंभव है। इसी अंतर्संबंध को ध्यान में रखते हुए, एनसीईआरटी ने इन मूल्यों को मुख्य रूप से पाँच श्रेणियों में वर्गीकृत किया है।

सदाचार सम्बन्धी मूल्य -28

सत्य सम्बन्धी मूल्य -8

शान्ति सम्बन्धी मूल्य -12

प्रेम सम्बन्धी मूल्य -8

अहिंसा सम्बन्धी मनोवैज्ञानिक मूल्य -13

अहिंसा सम्बन्धी सामाजिक मूल्य -14

कुल-83

संख्यागत विभक्त गुणों को इस प्रकार स्पष्ट किया जा सकता है-

सदाचार से सम्बद्ध मूल्य-

प्रारम्भिक अवस्था से सम्बद्ध मूल्यः स्वच्छता, आरोग्यता, शारीरिक श्रम का महत्व, समय का सदुपयोग, नियमितता, समय की पाबन्दी, स्वावलम्बन, आत्मनिर्भरता।

युवावस्था से सम्बद्ध मूल्यः- (उत्तरोतर कठिनाई के क्रम से), आज्ञापालन, कर्तव्य के प्रति निष्ठा, सादा जीवन, ईमानदारी, दूरदर्शिता, दूसरों के प्रति मान, वृद्धावस्था के प्रति मान, दूसरों की सेवा, आत्म-निर्भरता, आत्मोद्योग, साधन- पटुता, साहस, नेतृत्व, विश्वास, न्याय, सामूहिक रूप से कार्य करने की भावना, समानता, आत्म-त्याग।

सत्य-

बौद्धिक सत्य एवं अन्तर्ज्ञान सम्बन्धी जीवन-मूल्यः सच्चाई, जिज्ञासा, ज्ञान की खोज, जाँच करने की भावना, आत्म-विवेचन, सत्य और असत्य का विवेक (सद्-विवेक), धर्मनिरपेक्षता, सभी धर्मों का सम्मान, विश्वव्यापी, शाश्वत सत्य।

शान्ति-

संयम, अनुशासन, सहन शक्ति, धैर्य, ईमानदारी, आत्मानुशासन, आत्मसम्मान, निजी व्यक्तित्व की प्रतिष्ठा के प्रति जागृति, ध्यान शक्ति, समाधि, शान्ति ।

प्रेम-

निष्कपटता, पशुओं के प्रति दया, सहानुभूति, मैत्री, देश-भक्ति, भक्ति, सहनशीलता, मनुष्य की विश्व से सम्बन्धित उच्चतम दयालुता ।

मनोवैज्ञानिक मूल्य-

दयालुता, नम्रता, शिष्टाचार, सहायता करने की भावना, भाईचारा, भद्रपुरुषत्व, दूसरों को पीड़ा पहुँचाने की सर्वथा अनिच्छा, दूसरे के लिए आदर, दूसरों के प्रति चिन्ता, दूसरों को सहयोग देने की तत्परता, दूसरों के सांस्कृतिक मूल्यों के प्रति आदर, करुणा, विश्वव्यापी प्रेम।

सामाजिक मूल्य-

नागरिकता के उत्तरदायित्वों के प्रति जागरुकता, लोकतान्त्रिक निर्णयों से सहमति, सर्वहितकारी कार्य अपनाने के लिए तत्परता, सबकी भलाई करने की तत्परता, सक्रिय राष्ट्रीय जागरुकता, राष्ट्रीय एकता के लिए प्रेम, छुआ-छूत का बहिष्कार, नागरिक और राष्ट्रीय सम्पत्ति के प्रति जागृति, समाज-सेवा की भावना, समाजवाद और मानव-एकता की भावना

कक्षा ७ संस्कृत पाठ्यपुस्तक 'रुचिरा'-

पाठ्य सामग्री को रोचक बनाने के लिए कुछ पाठों की रचना संवाद अथवा नाट्य-शैली में की गई है। वर्णनात्मक पाठों में 'पण्डिता रमाबाई', 'विश्वबन्धुत्वम्', 'अमृतं संस्कृतम्', 'अनारिकायाः जिज्ञासा' और कथा पाठों में 'दुर्बुद्धिः विनश्यति' (पञ्चतन्त्र की संपादित कथा), 'स्वावलम्बनम्', 'समवायो हि दुर्जयः' जैसे पाठों में प्रेरणास्पद विषयवस्तु प्रस्तुत की गई है। संवादात्मक पाठों में छात्रों को आनन्द की अनुभूति कराने के लिए 'हास्यबालकविसम्मेलनम्' जैसे पाठों को भी स्थान दिया गया है। राष्ट्रध्वज के महत्त्व को बताने के लिए संवादात्मक शैली में 'त्रिवर्णः ध्वजः' पाठ को पुस्तक में सम्मिलित किया गया है।

पद्य-पाठों के अन्तर्गत 'सुभाषितानि', 'सदाचारः', 'विद्याधनम्' और लोरी के रूप में 'लालनगीतम्' जैसे पाठों के माध्यम से विद्यार्थियों को जीवनोपयोगी ज्ञान दिया गया है। नाटक के रूप में 'सङ्कल्पः सिद्धिदायकः' पाठ का भी समावेश किया गया है। इस प्रकार, इस पुस्तक में कुल 15 पाठ हैं, जो विद्यार्थियों को संस्कृत के साथ-साथ नैतिक और सांस्कृतिक मूल्यों का बोध कराते हैं।

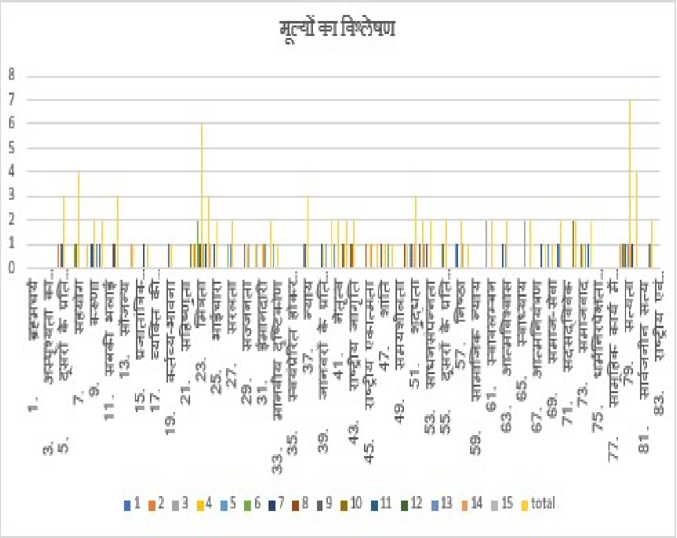

पाठ्य पुस्तक का पाठ वार विश्लेषण -

कक्षा 7 संस्कृत रुचिरा पुस्तक का पहला पाठ सुभाषितानि है जिसमें हमें एनसीईआरटी द्वारा निर्धारित 83 मूल्य में से सत्यता वाला मूल्य प्रत्यक्ष रूप में दिखाई देता परिलक्षित होता है जो कि बच्चों के लिए अति आवश्यक है

इस पाठ में छात्रों को मित्रता, सत्य, और कर्तव्य क्या होते हैं इसके महत्व को समझने का प्रयास किया है क्योंकि छात्र जीवन में कक्षा 7 के स्तर पर जरूरी होता है इसका दूसरा पाठ है दुर्बुद्धि: विनश्यति इस पाठ में मित्रता दूसरों की सहायता करना सहनशीलता आज्ञा पालन कृतज्ञता ईमानदारीइस तरह के मूल्य परिलक्षित होते हैं समझाया गया कि इस कुपित बुद्धि होती है उसका विनाश आवश्यक होता है

इस पुस्तक का तीसरा पाठ है स्वावलंबनम् सबसे पहले यही एक मूल्य है 83 में से उसके पश्चात इसमें हमें फिर तक देखा आत्मनिर्भरता ईमानदारी विश्वसनीयता दूसरों के प्रति सहानुभूति इत्यादि मूल्य देखने को मिलते हैं इस पाठ में समझाया जाए कि व्यक्ति को अपने ऊपर निर्भर बनाना चाहिए और सब कुछ होते हुए भी सादा जीवन देना चाहिए इसका चौथा पाठ है हास्य बालकविसम्मेलनम्

इस पाठ में कर्तव्य के प्रतिनिधि स्थान इस पाठ में मनोरंजन के छोटे-छोटे बड़े अच्छे तरीके से इस मूल्य को समझाया गया है

इसका पांचवा पाठ है पंडिता रमाबाई जो की शिक्षा महिला की कहानी है इसमें हमें साहस सहनशीलता न्याय परोपकार सबकी भलाई दूसरों की सहायता करना _ज्ञान के प्रति जिज्ञसा, सहयोग, समाज सेवा, निष्ठा, ईमानदारी, इत्यादि मूल्यों का उल्लेख मिलता है। इसका छठा पाठ सदाचार: है इस पाठ में मित्रता, समय का सदुपयोग, सरलता, दूसरों के प्रति सम्मान मूल्य मिलते हैं

और जैसा कि इस उम्र में मित्रता जैसी चीज बच्चों के लिए महत्वपूर्ण होते हैं इसलिए इन मूल्यों पर अधिक जोर दिया गया इसका सातवां पाठ है संकल्प: सिद्धिदायक: इस पाठ के माध्यम से संकल्प की शक्ति बताई गई है बच्चों को कि अगर एक काम किसी विषय को लेकर संकल्प लेते हैं तो उसमें हमें सिद्ध होता अवश्य प्राप्त होती है तो इसमें हमें उसके अनुसार कुछ मूल्य का उल्लेख मिलता है जैसा की आत्म अनुशासन शहंशाह करुणा विश्वसनीयता कर्तव्य निष्ठा भक्ति भावना यह पाठ माता पार्वती के तप पर आधारित है आठवां पाठ है त्रिवर्ण: ध्वज: इसमें हमारे राष्ट्रीयता देशभक्ति संबंधित मूल्य मिलते हैं जैसे की साहस, सत्यता, साधनसंपन्निता , सत्यता शुद्धता न्याय राष्ट्रीय एकता राष्ट्र के प्रति जागरूकता इस पाठ का उद्देश्य छात्रों के अंतर्गत देशभक्ति की भावना को उन्नत करना इसका नौंवा पाठ है न अहमपि विद्यालयं गमिष्यामि यह पाठ एक संवाद नाटक के माध्यम से है इसमें 8 वर्ष की बालिका की कहानी जो किसी के घर काम करने जाते हैं उसको विद्यालय भेजने के लिए प्रेरित किया जाता है तो इसमें हमें न्याय कर्तव्य भावना सहयोग सहानुभूति आत्म निष्ठ मानवीय दृष्टिकोण आदि मूल्य देखने को मिलते हैं जनता दसवां पाठ में विश्वबंधुत्वम् हमें सहयोग मित्रता विश्व बंधुत्व राष्ट्रीय एकता जागृति सामान्य सामाजिक उत्तरदायित्व इत्यादि मूल्य प्राप्त होते हैं इस पाठ के माध्यम से छात्रों की बौद्धिक स्तर को वैश्विक परिदृश्य के तहत चिंतन करने के लिए प्रेरणा देता है उनके अंदर विश्व परिवार है की भावना जागृत करने का लक्ष्य हैं इसका 11वां पाठ है समवायो हि दुर्जय: इस पाठ में हमें मानव मात्र की एकता भाईचारा दूसरों के

प्रति सहानुभूति सहयोग परोपकार करुणा विश्वसनीयता दूसरों की सहायता करना जानवरों के प्रति दया भाव आदि मूल्य मिलते हैं इसका 12वां पाठ विद्याधनम् हैं सत्यता कर्तव्य मित्रता इत्यादि मूल्य बताए गए हैं इसका 13वां पाठ अमृतम् संस्कृतम् है इस पाठ में वैसे तो संस्कृत की विषय में बताया गया संस्कृत की महानता के विषय में बताया गया इसमें हमें सत्य का विश्व बंधुत्व ज्ञान के प्रति जिज्ञासा सरलता विश्व बंधुत्व आदि मूल्य बताए गए इसका 14 वां पाठ हैं अनारिकाया: जिज्ञासा इस पाठ में ज्ञान के प्रति जिज्ञासा मूल्य प्राप्य है 15 वां पाठ लालनगीतम् हैं इस पाठ में हमें स्वच्छता शब्द का करुणा शांति आदि मूल्य प्राप्त होते हैं इन मूल्यों के आधार पर इन संपूर्ण पाठ्यपुस्तक में दिए गए मूल्यों का उल्लेख उसे तरह के छात्र के लिए नितांत आवश्यक है की वर्तमान स्थिति की कुछ ऐसी है जो एनसीईआरटी में अपने 83 मूल्यों को 6 भागों में बांटा गया है उसमें से इसमें मनोवैज्ञानिक मूल्य विशेष रूप से परीक्षित होते हैं अर्थात इस पाठ्य पुस्तक का मुख्य उद्देश्य छात्रों के अंदर प्रेम, सत्यता आदि के भाव जागृत हो एवं व्यक्तियों के मनोविज्ञान को समझ सके वैसे मूल्य जागृत करने की बात की गई है परंतु अन्य मूल्य गौण रूप में किन-चार दिखाई देते हैं इस प्रकार मूल्य की चर्चा की गई हैस्तर पर हमें सामाजिक मूल्यों पर विशेष रूप से ध्यान देने की जरूरत है

निष्कर्ष:

इस लेख से यह स्पष्ट होता है कि भारत में वर्तमान समय में शिक्षा और समाज में संक्रमण काल का अनुभव हो रहा है, जिसमें पुराने मूल्य और परंपराएं धीरे-धीरे धुंधली पड़ रही हैं, और आधुनिकता के प्रभाव से उपभोक्तावाद एवं नास्तिकता का प्रचलन बढ़ा है। समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार, झूठ, और अन्य अवगुणों के बावजूद व्यक्ति और समाज के भीतर अपनी पुरानी मूल्य प्रणाली को बचाए रखने की चाहत है। इस संदर्भ में मूल्यपरक शिक्षा की आवश्यकता अत्यधिक प्रासंगिक हो जाती है, ताकि समाज में समरसता, बंधुत्व, और राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा दिया जा सके।

पाठ्यपुस्तकों के बिना शिक्षा की प्रक्रिया अपूर्ण होती है। हालांकि, शिक्षा के क्षेत्र में कुछ विशेषज्ञों ने अनुभव-आधारित और क्रियात्मक शिक्षा पर जोर दिया है, फिर भी यह स्पष्ट है कि पाठ्यपुस्तकों का महत्व समाप्त नहीं किया जा सकता। वे शिक्षण के प्रभावी उपकरण के रूप में हमेशा आवश्यक रहेंगी।

इस प्रकार, यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि मूल्यपरक शिक्षा और पाठ्यपुस्तकों का उचित उपयोग दोनों ही समाज में सकारात्मक परिवर्तन और स्थायी सुधार लाने में सहायक होंगे।

1.मूल्य आधारित शिक्षा: इस पाठ्यपुस्तक का उद्देश्य बच्चों को मूल्य शिक्षा देना है, ताकि वे अपने जीवन में इनका पालन करें और अपने व्यक्तित्व का सकारात्मक विकास कर सकें। विद्यार्थियों को यह समझाया गया है कि जीवन में सफलता पाने के लिए न केवल शिक्षा की जरूरत होती है, बल्कि अच्छे मूल्य भी उतने ही महत्वपूर्ण हैं।

2.समाज और राष्ट्र के प्रति उत्तरदायित्व: कई पाठों में बच्चों को समाज के प्रति अपने कर्तव्यों और जिम्मेदारियों को समझने के लिए प्रेरित किया गया है। उदाहरण के तौर पर, "त्रिवर्ण ध्वज" पाठ में राष्ट्रीयता और देशभक्ति को प्रमुखता दी गई है। वहीं, "विश्वबंधुत्व" पाठ में वैश्विक एकता और सामाजिक जिम्मेदारी के मूल्य पर बल दिया गया है।

3.सामाजिक और व्यक्तिगत मूल्यों का संतुलन: इस पुस्तक में व्यक्तिगत मूल्य जैसे सत्यता, कर्तव्य, ईमानदारी, और स्वावलंबन के साथ-साथ सामाजिक मूल्य जैसे सहानुभूति, सहयोग, भाईचारे, और समाज सेवा को भी महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है।

4.मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण: जैसा कि आपने उल्लेख किया, इस पुस्तक में मनोवैज्ञानिक मूल्यों को विशेष रूप से परखी गई हैं, जैसे आत्मअनुशासन, संकल्प, और आत्मनिर्भरता। इन मूल्यों का उद्देश्य बच्चों के मनोविज्ञान को समझना और उन्हें मानसिक रूप से मजबूत बनाना है।

5.सामाजिक मूल्यों का विस्तार: हालांकि इस पुस्तक में सामाजिक मूल्यों का अच्छा समावेश है, फिर भी यह सुझाव दिया जा सकता है कि इन मूल्यों को और अधिक विस्तृत किया जाए, ताकि विद्यार्थी अपने सामाजिक जीवन को बेहतर तरीके से समझ सकें और समाज में सकारात्मक बदलाव ला सकें। सामाजिक रिश्ते, सामूहिकता, और साझा जिम्मेदारी जैसे विषयों पर और अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है।

समाप्ति में, इस पुस्तक का उद्देश्य विद्यार्थियों को जीवन के अच्छे मूल्यों से परिचित कराना और उन्हें अपने दैनिक जीवन में इन्हें अपनाने के लिए प्रेरित करना है। यह छात्रों को न केवल एक अच्छा इंसान बनाने की दिशा में मार्गदर्शन करता है, बल्कि उन्हें एक जिम्मेदार और संवेदनशील नागरिक भी बनाता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची-

2009, रुचिरा संस्कृत पाठ्य पुस्तक दिल्ली पाठ्य पुस्तक ब्यूरो

2011, रश्मि चतुर्वेदी एवं डॉक्टर हेमंत खांडी मूल्य शिक्षा ए.फ. पब्लिक सिंह कॉरपोरेशन दरयागंज न्यू दिल्ली

2014, प्रोफेसर भास्कर मिश्रा मूल्य आधारित शिक्षा कनिष्क पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली

नई शिक्षा नीति 2020

प्रोफेसर पाण्डेय राम शकल मूल्य शिक्षा । आर.लाला बुक डिपो मेरठ

रूहेला, एस.पी. (2012), डायमेंशन ऑफ वैल्यू एजूकेशन, आगरा, एच.पी. भार्गव बुक हाऊस